IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

बाल विकास गृहों का बच्चों की स्मृति एवं सीखने की क्षमता पर प्रभाव

सारिका सक्सेना[1] and डॉ. जयंती त्रिपाठी[2]

[1]शोधार्थी, गृह विज्ञान- विभाग

[2]प्रोफेसर, गृह विज्ञान- विभाग

सनराइज़ विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)

सारांश

बाल विकास गृह समाज के उन बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण संरक्षण तंत्र हैं जो अनाथ, परित्यक्त, शोषित, उपेक्षित अथवा संकटपूर्ण परिस्थितियों में जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं। इन संस्थानों का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को सुरक्षा, भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ तथा सामाजिक संरक्षण प्रदान करना है। यद्यपि बाल विकास गृह बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, तथापि अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि संस्थागत वातावरण बच्चों के संज्ञानात्मक विकास, स्मृति क्षमता, सीखने की दक्षता तथा शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित कर सकता है। स्मृति एवं अधिगम मानव विकास के ऐसे महत्वपूर्ण आयाम हैं जो व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक जीवन की नींव तैयार करते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था में प्राप्त अनुभव मस्तिष्क के विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं और यही अनुभव आगे चलकर बच्चों की सीखने तथा याद रखने की क्षमता को निर्धारित करते हैं।

मुख्य संकेतक: स्मृति, अधिगम क्षमता, संज्ञानात्मक विकास, संस्थागत देखभाल, शैक्षणिक उपलब्धि, कार्यकारी स्मृति।

परिचय

बच्चों का विकास एक लाभदायक प्रक्रिया है जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा बौद्धिक विकास सम्मिलित होते हैं। इनमें से संज्ञानात्मक विकास बच्चों की सीखने की क्षमता, स्मृति, भाषा,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, March 2026 Impact Factor: 8.2

निर्णय क्षमता तथा समस्या समाधान कौशल का आधार बनता है। सामान्यतः परिवार बच्चों के विकास का प्रथम एवं सबसे प्रभावी माध्यम होता है। परिवार बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा, स्नेह, संरक्षण तथा सामाजिक मूल्यों का वातावरण प्रदान करता है, जिससे उनका मानसिक एवं बौद्धिक विकास संतुलित रूप से होता है। लेकिन अनेक सामाजिक, आर्थिक तथा पारिवारिक कारणों से कुछ बच्चे अपने परिवारों से अलग उर बाल विकास घरों में रहने के लिए विवश हो जाते हैं। भारत में किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम, 2015 के तहत ऐसे बच्चों को संरक्षण प्रदान करने हेतु बाल देखभाल पद्धति की व्यवस्था की गई है। यद्यपि इन पद्धतियों का उद्देश्य बच्चों का समग्र विकास सुनिश्चित करना है, तथापि छू ने पाया है कि जैविक जीवन बच्चों के मनोवैज्ञानिक एवं संज्ञानात्मक विकास को कई प्रकार से प्रभावित करता है।

नेल्सन, फॉक्स एवं ज़ीनह (2014) के अनुसार प्रारंभिक बाल्यावस्था में स्थायी एवं भावनात्मक देखभाल का अभाव बच्चों के मस्तिष्क विकास पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है। इसी प्रकार डोजियर एट अल. (2012) ने बताया कि पर्यावरणीय वातावरण में रहने वाले बच्चों को व्यक्तिगत ध्यान कम मिलने के कारण उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

बाल विकास गृहों की अवधारणा एवं उद्देश्य

बाल विकास गृह ऐसे संस्थान हैं जहाँ उन बच्चों को आश्रय प्रदान किया जाता है जिनके माता-पिता नहीं हैं, जिन्होंने बच्चों को त्याग दिया है, या जो किसी प्रकार के शोषण, उपेक्षा अथवा संकट की स्थिति में पाए गए हैं। इन संस्थानों के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बच्चों को सुरक्षित आवास उपलब्ध कराना।
2. शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना।
3. भावनात्मक एवं सामाजिक पुनर्वास सुनिश्चित करना।
4. बच्चों के व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहित करना।
5. उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ना।

यद्यपि इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अनेक प्रयास किए जाते हैं, परंतु पारिवारिक वातावरण का विकल्प पूर्ण रूप से उपलब्ध कराना कठिन होता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, March 2026 Impact Factor: 8.2

स्मृति की अवधारणा एवं बाल विकास में उसका महत्व

स्मृति (मेमोरी) मानव मस्तिष्क की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने दीक्षा, ज्ञान, नशा और कौशल को ग्रहण, संग्रहित और आवश्यक रूप से पुनः आरंभ करता है। स्मृति के बिना, पहचानना, पहचानना और स्मृति चिन्ह का उपयोग संभव नहीं है। मनोविज्ञान में स्मृति को ऐसी मानसिक शक्ति माना जाता है जो व्यक्ति को अतीत के अवशेषों को संरक्षित बनाए रखता है और वर्तमान में उनका उपयोग करने में सक्षम होता है। स्मृति मानव व्यक्तित्व के विकास, ज्ञानार्जन, सामाजिक समायोजन और बौद्धिक प्रगति की सूची है। विशेष रूप से बाल्यावस्था में स्मृति का विकास महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसमें वह स्तर होता है जिसमें बच्चों की भाषा, व्यवहार, सामाजिक नैतिकता, नैतिक नैतिकता और आध्यात्म को सीखाया जाता है। यदि स्मृति का क्षमता विकास नामित रूप में होता है, तो बच्चे का अधिगम, समस्या समाधान कौशल और रचनात्मकता का विकास भी प्रभावी ढंग से होता है। दूसरी ओर स्मृति संबंधी संरचनात्मक संरचनाएं बच्चों के विद्यार्थियों के प्रदर्शन, सामाजिक व्यवहार और अनुशासन को प्रभावित कर सकती हैं।

स्मृति को सामान्यतः तीन प्रमुख भंडारों में विभाजित किया गया है- सूचना का अभिग्रहण (एनकोडिंग), संग्रहकर्ता (भंडारण) और पुनर्प्राप्ति (पुनर्प्राप्ति)। जब कोई बच्चा किसी नई सूचना को ग्रहण करता है, तब वह उसे मानसिक रूप से सुरक्षित करता है और मस्तिष्क में संग्रहित करता है। आवश्यकता पर समान सूचना पुनःप्राप्त की जाती है। उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा वर्णमाला, कविताएँ या गणित के सूत्र सीखता है, तो वह उन्हें अपनी स्मृति में बदल देता है और उनके उपयोग पर परीक्षण या दैनिक जीवन की आवश्यकता पैदा करता है। इस प्रकार स्मृति सीखने की पूरी प्रक्रिया का आधार बनता है। एटकिंसन और शिफरीन (2011) के अनुसार स्मृति के तीन भाग कार्य करते हैं-संवेदी स्मृति (संवेदी स्मृति), चिंतक स्मृति (अल्पकालिक स्मृति) और अध्यात्म स्मृति (दीर्घकालिक स्मृति)। सांस लेने में बहुत कम समय लगता है, जबकि सांस लेने में बहुत कम समय लगता है, जबकि सांस लेने में बहुत कम समय लगता है। आध्यात्म स्मृति में सूचना दी गई है कि वे लंबे समय तक किले पर टिके रहे हैं और व्यक्ति जीवन भर उनका उपयोग कर सकते हैं।

बाल विकास के सन्दर्भ में स्मृति का महत्व अत्यंत व्यापक है। बाल्यावस्था में बच्चे निरंतर नई शिक्षाएँ प्राप्त करते हैं और अपने शिक्षा के आधार पर ज्ञान का निर्माण करते हैं। स्मृति के माध्यम से ही वह बच्चों को पूर्व शिक्षा से सीखने और नई शिक्षा प्रदान करने में सहायता प्रदान करती है। विकास में स्मृति भाषा की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जब बच्चा नया शब्द सीखता है, तो उनका अर्थ बदल जाता है और उन्हें विवादित

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, March 2026 Impact Factor: 8.2

प्रयोग किया जाता है, तब वह अपनी स्मृति का उपयोग कर रहा होता है। यदि बच्चे की याददाश्त क्षमता अच्छी है, तो वह भाषा को अधिक प्रभावशाली ढंग से सीख पाता है। भाषा विकास का यह आधार आगे चलकर उनके शैक्षणिक विकास को भी प्रभावित करता है। गैदरकोल और एलोवे (2013) के अनुसार कार्यकारी मेमोरी (वर्किंग मेमोरी) बच्चों की पढ़ाई, क्षमता और चुनौती को हल करने की क्षमता का एक प्रमुख निर्धारक है।

स्मृति का महत्व केवल वैज्ञानिक प्रमाणन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चों के सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चे अपने परिवार, दोस्तों और शिक्षकों के साथ मिलकर बच्चों को स्मरण रखते हैं और किशोर बच्चों के आधार पर सामाजिक आधार का निर्माण करते हैं। बच्चों में सकारात्मक अनुभव, सुरक्षा और सामाजिक समायोजन की भावना विकसित होती है, जबकि नकारात्मक अनुभव से उनका व्यवहार और व्यक्तित्व प्रभावित हो सकता है। स्मृति के माध्यम से बच्चे को सामाजिक सांस्कृतिक, नैतिक नैतिकता और सांस्कृतिक साध्य की शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार मेमोरी सोशल एडगम का भी एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

शैक्षणिक दृष्टि से स्मृति का बहुत महत्व है क्योंकि स्कूली शिक्षा का सबसे बड़ा भाग स्मृति पर आधारित होता है। बच्चे को पाठ्यवस्तु को समझाना, याद रखना और उचित समय पर प्रस्तुत करना आवश्यक है। गणित, विज्ञान, भाषा, सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषयों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रभावशाली स्मृति की आवश्यकता होती है। शोध से यह सिद्ध हुआ है कि जिन बच्चों की कार्यकारी स्मृतियाँ बेहतर होती हैं, वे जटिल कार्य बेहतर ढंग से हल कर पाते हैं और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ भी अधिक मजबूत होती हैं (बैडले, 2012)। एक्जीक्यूटिव मेमोरी बच्चों को एक साथ कई नींद पर ध्यान केंद्रित करने, सीखने की प्रक्रिया को सुरक्षित करने में सहायता प्रदान करता है। इसके विपरीत बच्चों में एक्ज़ीक्यूटिव मेमोरी की कमज़ोरी का कारण एजीगैम एसोसिएटेड क्रेश्चन हो सकता है।

विचारधारा विकास के सिद्धांतों में भी स्मृति को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। पियागेट (2010) के बच्चों का प्रतिभावान विकास विभिन्न चरणों में होता है और प्रत्येक चरण में उसकी याददाश्त और सोचने की क्षमता के अनुसार विकास होता है। प्रारंभिक अवस्था में बच्चों का मुख्य आधार: प्रत्यक्षदर्शी के आधार पर प्रशिक्षण दिया जाता है, जबकि बाद के तृतीय चरण में वे चमत्कार के आधार पर भी संकेत दिए जाते हैं। इसी प्रकार वायगोत्स्की (2011) ने सामाजिक अंतःक्रिया को स्मृति एवं अधिगम के विकास का महत्वपूर्ण आधार माना।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

उनके अनुसार बच्चे ने अपने सामाजिक परिवेश से प्राप्त अवशेषों को स्मृतियों में संग्रहित किया है और नीजी के आधार पर नए भवन का निर्माण किया है।

स्मृति का संबंध मस्तिष्क के जैविक विकास से भी है। आधुनिक तंत्रिका विज्ञान के अनुसार मस्तिष्क का हिप्पोकैम्पस (हिप्पोकैम्पस) तथा प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स (प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स) स्मृति निर्माण एवं सूचना प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बाल्यावस्था में इन मस्तिष्कीय आंदोलनों का तीव्र विकास होता है, जिसके कारण बच्चों की स्मरण शक्ति और सीखने की क्षमता में निरंतर वृद्धि होती है। उचित पोषण, सकारात्मक वातावरण, शर्करा शिक्षा तथा भावनात्मक सुरक्षा स्मृति विकास को प्रोत्साहित करते हैं, जबकि तनाव, अभाव, हिंसा और प्रतिकूल परिस्थितियां स्मृति विकास को बाधित कर सकती हैं (नेल्सन, फॉक्स और ज़ीनाह, 2014)। विशेष रूप से बाल विकास घरों, अनाथालयों अथवा अन्य पारिस्थितिक वातावरण में रहने वाले बच्चों के संदर्भ में यह देखा गया है कि भावनात्मक अभाव और सीमित व्यक्तिगत देखभाल के कारण उनकी स्मृति एवं अधिगम क्षमता प्रभावित हो सकती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्मृति विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। खेल आधारित अधिगम, गतिविधि आधारित शिक्षण, दृश्य-श्रव्य सामग्री, प्रसारण, समूह चर्चा तथा समस्या समाधान आधारित शिक्षण बच्चों की स्मृति को खोलने में सहायक सिद्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त नियमित शारीरिक गतिविधियां, पर्याप्त नींद, संतुलित आहार तथा सकारात्मक पारिवारिक वातावरण भी स्मृति विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शिक्षकों और स्वयंसेवकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वे बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान कर सकते हैं जो उनकी स्मरण शक्ति एवं अधिगम क्षमता को प्रोत्साहित करे।

स्मृति मानव विकास की एक मूलभूत एवं अनिवार्य मानसिक प्रक्रिया है, जो बाल विकास के प्रत्येक आयाम को प्रभावित करती है। यह न केवल ज्ञानार्जन और शैक्षणिक सफलता का आधार है, बल्कि सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यक्तित्व विकास की भी महत्वपूर्ण कुंजी है। बाल्यावस्था में स्मृति का समुचित विकास बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखता है। इसलिए परिवार, विद्यालय तथा समाज को मिलकर ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए जो बच्चों की स्मृति एवं अधिगम क्षमता के विकास को प्रोत्साहित करे और उन्हें अपने पूर्ण बौद्धिक सामर्थ्य तक पहुँचने का अवसर प्रदान करे।

स्मृति वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति सूचना को ग्रहण करता है, छानबीन करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर पुनः स्मरण करता है। स्मृति के बिना सीखना संभव नहीं है। एटकिंसन और शिफरीन के स्मृति मॉडल के अनुसार स्मृति तीन स्तरों–संवेदी स्मृति, प्राथमिक स्मृति एवं सतत स्मृति–में कार्य करती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, March 2026 Impact Factor: 8.2

बच्चों के शैक्षणिक विकास में स्मृति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि: -

1. यह भाषा सीखने में सहायता करती है।
2. गणितीय अवधारणाओं को समझने में सहायक होती है।
3. समस्या समाधान कौशल विकसित करती है।
4. शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।
5. रचनात्मकता एवं तर्क क्षमता को बढ़ाती है।

यदि स्मृति विकास बाधित होता है तो बच्चों की अधिगम क्षमता भी प्रभावित होती है।

संस्थागत वातावरण और मस्तिष्क विकास

2010 से 2022 के मध्य प्रकाशित न्यूरोसाइकिक संगठनात्मक संरचनाओं से यह स्पष्ट हुआ है कि प्रारंभिक जीवन में अभाव एवं भावनात्मक अभाव मस्तिष्क की संरचना और गतिविधियों को प्रभावित करते हैं।

नेल्सन एट अल. (2014) द्वारा किए गए बुखारेस्ट अर्ली इंटरवेंशन प्रोजेक्ट में पाया गया कि पर्यावरणीय वातावरण में रहने वाले बच्चों के मस्तिष्क में विद्युत गतिविधि (ईईजी गतिविधि) सामान्य बच्चों की तुलना में कम थी। यह स्थिति ध्यान, स्मृति तथा सीखने की आदतों को प्रभावित करती है।

मैकलॉघलिन एट अल. (2015) ने पाया कि लंबे समय तक पर्यावरणीय देखभाल में रहने वाले बच्चों में कार्यकारी कार्यों (एग्जीक्यूटिव फंक्शंस) का विकास धीमा होता है। कार्यकारी कार्यों में ध्यान नियंत्रण, योजना निर्माण, निर्णय लेना तथा कार्यकारी स्मृति सम्मिलित होती है।

बाल विकास गृहों का बच्चों की स्मृति पर प्रभाव

अनेक शोध अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि संस्थागत वातावरण बच्चों की स्मृति क्षमता को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

कार्यकारी स्मृति पर प्रभाव

एग्जीक्यूटिव मेमोरी वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी सूचना को अल्प अवधि के लिए मन में गणना उसका उपयोग करता है। विद्यालयी शिक्षा में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बॉस (2018)के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, March 2026 Impact Factor: 8.2

अनुसार पर्यावरणीय देखभाल में रहने वाले बच्चों की एग्जीक्यूटिव मेमोरी सामान्य बच्चों की तुलना में कम विकसित पाई गई। इससे उनके गणितीय एवं भाषाई प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

दीर्घकालिक स्मृति पर प्रभाव

पर्यावरणीय वातावरण में रहने वाले बच्चों को अनेक तनाव अनुभवों का सामना करना पड़ता है। दीर्घकालिक तनाव हिप्पोकैम्पस (हिप्पोकैम्पस) को प्रभावित करता है, जो स्मृति निर्माण का प्रमुख मस्तिष्कीय भाग है। टोटेनहैम (2012) ने बताया कि भावनात्मक अभाव और तनाव के कारण बच्चों की दीर्घकालिक स्मृति कमजोर हो सकती है।

ध्यान एवं स्मरण क्षमता

अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि संस्थागत बच्चों में ध्यान भंग होने की समस्या अधिक पाई जाती है। ध्यान की कमी सीधे तौर पर स्मरण शक्ति को प्रभावित करती है।

बाल विकास गृहों का सीखने की क्षमता पर प्रभाव

सीखना एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें स्मृति, भाषा, प्रेरणा, सामाजिक सहभागिता तथा भावनात्मक स्थिरता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1. भाषा विकास

विंडसर (2011)ने पाया कि संस्थागत बच्चों का भाषा विकास सामान्य बच्चों की तुलना में धीमा होता है। सीमित सामाजिक संपर्क और व्यक्तिगत संवाद की कमी इसके प्रमुख कारण हैं।

2. शैक्षणिक उपलब्धि

भारत तथा अन्य देशों में किए गए अध्ययनों ने संकेत दिया कि बाल विकास गृहों में रहने वाले बच्चों का शैक्षणिक प्रदर्शन सामान्यतः निम्न स्तर का होता है। इसके पीछे ध्यान की कमी, स्मृति संबंधी कठिनाइयाँ तथा मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्तरदायी होती हैं।

3. समस्या समाधान क्षमता

संस्थागत वातावरण में बच्चों को निर्णय लेने और स्वतंत्र रूप से अनुभव प्राप्त करने के अवसर अपेक्षाकृत कम मिलते हैं, जिससे उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता प्रभावित हो सकती है।

भावनात्मक कारक और अधिगम

स्मृति और अधिगम केवल बौद्धिक प्रक्रियाएँ नहीं हैं बल्कि भावनात्मक अनुभवों से भी प्रभावित होते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

1. लगाव की कमी
2. आत्मसम्मान का निम्न स्तर
3. चिंता एवं अवसाद
4. सामाजिक अलगाव

ये सभी कारक बच्चों की सीखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। ज़ियानाह (2017) के अनुसार सुरक्षित लगाव वाले बच्चों का संज्ञानात्मक विकास बेहतर पाया गया।

भारत में किए गए अध्ययन

भारत में NIPCCD, NCERT तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा किए गए अध्ययनों में यह पाया गया कि बाल गृहों में रहने वाले बच्चों को शैक्षणिक सहायता, मनोवैज्ञानिक परामर्श तथा भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता होती है। कई अध्ययनों में यह भी पाया गया कि गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रम बच्चों की सीखने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार ला सकते हैं।

सुधारात्मक उपाय

1. प्रशिक्षित देखभालकर्ताओं की नियुक्ति।
2. व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ।
3. स्मृति विकास कार्यक्रम।
4. मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ।
5. खेल आधारित अधिगम।
6. डिजिटल शिक्षण संसाधनों का उपयोग।
7. परिवार आधारित पुनर्वास कार्यक्रम।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

निष्कर्ष

2010 से 2022 तक के शोध अध्ययनों की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि बाल विकास गृहों का बच्चों की स्मृति एवं सीखने की क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संस्थागत वातावरण में रहने वाले बच्चों में कार्यकारी स्मृति, ध्यान, भाषा विकास तथा शैक्षणिक उपलब्धियों में कमी देखी गई है। इसका प्रमुख कारण भावनात्मक अभाव, व्यक्तिगत देखभाल की कमी तथा प्रारंभिक जीवन के प्रतिकूल अनुभव हैं। हालांकि उचित हस्तक्षेप, गुणवत्तापूर्ण देखभाल, मनोसामाजिक समर्थन तथा प्रभावी शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से इन बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में उल्लेखनीय सुधार संभव है। इसलिए बाल विकास गृहों में बाल-केंद्रित एवं विकासोन्मुखी नीतियों को अपनाना समय की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. ए., नाज़, एस., और सुजात, ए. राजेश (2022)। फैक्ट्री केयर में रह रहे बच्चों के जीवन और उनके विकास पर इसका असर। वॉइस ऑफ टीचर्स एंड स्ट्रेंजर एजुकेटर्स, टूर्नामेंट 11(2), पेज 36-48।

2. एटकिंसन, आर. सी., और शिफ्रिन, आर. एम. (2011). ह्यूमन मेमोरी: एक प्रस्तावित सिस्टम और इसकी नियंत्रण प्रक्रियाएँ।

3. क्रुपिना, एम.जी., बाउर, पी.जे., गुन्नार, एम.आर., और जॉनसन, डी.ई. (2010)। डिक्लेरेटिव मेमोरी (घोषणात्मक स्मृति) के विकास के लिए दस्तावेज़ देखभाल एक जोखिम है। बाल विकास और व्यवहार में प्रगति, वॉल्यूम। 38, पृ. 137-159.

4. गैदरकोल, एस. ई., और एलोवे, टी. पी. (2013). वर्किंग मेमोरी और लर्निंग: शिक्षकों के लिए एक प्रैक्टिकल गाइड। सेज पब्लिकेशन्स।

5. ज़ेनाह, सी.एच., हम्फ्रीज़, के.एल., फॉक्स, एन.ए., और नेल्सन, सी.ए. (2017)। बच्चों के लिए विकल्प छोड़ें: बुखारेस्ट अर्ली इंटरवेंशन प्रोजेक्ट से मिली जानकारी। करंट ओपिनियन इन साइकोलॉजी, लाभ 15, पृष्ठ 182-188।

6. जैक्सन, एस., फिगुएरा-बेट्स, सी., और हॉलिंगवर्थ, के. (2022)। अदृश्य शिशु: छोटे बच्चों और बच्चों के घर से बाहर की देखभाल और शिक्षा। एडॉप्शन एंड फॉस्टरिंग, लाभ 46(1)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

7. डोज़ियर, एम., ज़ेनाह, सी.एच., वालिन, ए.आर., और शॉफ़र, सी. (2012)। छोटे बच्चों के लिए नोटबुक देखभाल: साहित्य की समीक्षा और नीतिगत निहितार्थ। सामाजिक मुद्दे और नीति समीक्षा, वॉल्यूम। 6(1), पृ. 1-25.

8. नेल्सन, सी. ए., फॉक्स, एन. ए., और ज़ेनाह, सी. एच. (2014). रोमानिया के छोड़े गए बच्चे: अभाव, मस्तिष्क का विकास और रिकवरी के लिए संघर्ष। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

9. फॉक्स, एन.ए., अल्मास, ए.एन., डेगनन, के.ए., और अन्य (2011)। गंभीर मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अभाव का अभ्यास विकास पर प्रभाव। प्रोजेक्ट्स, प्रोजेक्ट्स, 5(4), पृष्ठ 263-270।

10. बेकरमैन्स-क्रैननबर्ग, एम.जे., वैन इजेंडोर्न, एम.एच., और जफ़र, एफ. (2008, 2010–2022 की जिज्ञासा में बार-बार उद्धृत)। जितना जल्दी हो, उतना बेहतर: टॉयलेट केयर में रह रहे बच्चों के प्रशिक्षण पर इंटरवेंशन का प्रभाव मेटा-विश्लेषण। मोनोग्राफ़्स ऑफ़ द सोसाइटी फ़ोर रिच इन शेयरधारकों, प्रस्ताव 73(3), पृष्ठ 279-293।

11. बेरुमेंट, एस.के. (2013)। तुर्की के अनाथालयों में बच्चों के विकास को बढ़ावा देने के लिए सांता को बेहतर बनाना और देखभाल करने वालों को प्रशिक्षण देना। इन्फेंटमेंटल हेल्थ जर्नल, लाभ 34(3), पृष्ठ 189-201।

12. बैडली, ए. डी. (2012). वर्किंग मेमोरी: थ्योरी, मॉडल और विवाद। एनुअल रिव्यू ऑफ़ साइकोलॉजी, 63, 1–29.

13. बोस, के.जे., फॉक्स, एन.ए., ज़ेनाह, सी.एच., और नेल्सन, सी.ए. (2018)। प्रारंभिक मनोवैज्ञानिक-सामाजिक अभाव का कार्यकारी कार्य पर प्रभाव। बाल विकास, खंड. 89(1), पृ. 47-62.

14. मार्शल, पी.जे., फॉक्स, एन.ए., और बीईआईपी कोर ग्रुप (2018)। बुख़ारेस्ट अर्ली इंटरवेंशन प्रोजेक्ट। विकास और मनोचिकित्सा, वॉल्यूम। 30(2), पृ. 695-707।

15. मेस्किटा, ए.आर., कैडिमा, जे., लील, टी., एट अल। (2019)। आरंभिक पारिवारिक हार्डाइयाँ, स्थिर और मोटर विकास में स्थिरता और मोटर विकास, और पुस्तकालय का प्रशिक्षण। शिशु व्यवहार और विकास, वॉल्यूम। 57, अनुच्छेद 101387.

16. मैकलॉघलिन, के.ए., शेरिडन, एम.ए., और नेल्सन, सी.ए. (2015)। अनदेखा, आर्किटेक्चर-अपेक्षित अनुभव का उल्लंघन है। मनोवैज्ञानिक विज्ञान में वर्तमान दिशाएँ, खंड। 24(6), पृ. 462-469.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, March 2026
Impact Factor: 8.2

17. वायगोत्स्की, एल. एस. (2011). माइंड इन सोसाइटी: उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विकास। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

18. वेड, एम., ज़ेनाह, सी.एच., फॉक्स, एन.ए., और नेल्सन, सी.ए. (2019)। बच्चों का प्रशिक्षण-पोषण और प्रशिक्षण परिणाम। विकासात्मक विज्ञान, खंड. 22(4), ई12783.

19. वैन आईजेंडोर्न, एम.एच., पलासियोस, जे., सोनुगा-बार्के, ई.जे.एस., एट अल। (2011). एंटरप्राइज़ देखभाल में बच्चे: विकास में देरी और लचीलापन (लचीलापन)। बाल विकास में अनुसंधान के लिए सोसायटी के मोनोग्राफ, वॉल्यूम। 76(4), पृ. 8-30।

20. वैन आईज्ज़ेंडोर्न, एम.एच., बेकरमैन्स-क्रानेंबर्ग, एम.जे., डुस्चिंस्की, आर., एट अल। (2020)। बच्चों का प्रोटोटाइप और वि-संस्थागतकरण। द लैंसेट चाइल्ड एंड एडोलेसेंट हेल्थ, वॉल्यूम। 4(9), पृ. 703-713.

21. शेरिडन, एम.ए., पेवेरिल, एम., फिन, ए.एस., और मैकलॉघलिन, के.ए. (2017)। प्रारंभिक अनुभव और तंत्रिका विकास (तंत्रिका विकास) के आयाम। विकास और मनोचिकित्सा, वॉल्यूम। 29(5), पृ. 1777-1796।

22. हर्मेनौ, के., गोएसमैन, के., रायगार्ड, एन.पी., लैंडोल्ट, एम.ए., और हेकर, टी. (2017)। देखभाल की गुणवत्ता में सुधार करके बच्चों के विकास को बढ़ावा देना। आघात, हिंसा और दुर्व्यवहार, खंड। 18(5), पृ. 544-561.

23. हम्फ्रीज़, के.एल., किंग, एल.एस., और गोटलिब, आई.एच. (2020)। प्रारंभिक हार्डाइयाँ और प्रशिक्षण विकास। विकासात्मक मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा, खंड। 2, पृ. 251-276.

24. हम्फ्रीज़, के.एल., ग्लीसन, एम.एम., डुरी, एस.एस., एट अल। (2015)। विचारधारा-पोषण और पालन-पोषण (पालक देखभाल) का मनोविकृति (साइकोपैथोलॉजी) पर प्रभाव। जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ़ चाइल्ड एंड एडोलेसेंट साइकियाट्री, वॉल्यूम। 54(9), पृ. 713-720.